**उत्तर वैदिक काल की सामाजिक स्थिति**

डॉ. कमलेश कुमार

सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

प्राचीन इतिहास विभाग

SNSRKS COLLEGE SAHARSA

- इस काल में आर्यों ने कबीलाई जीवन का परित्याग कर स्थायी जीवन में प्रवेश किया. समाज में सम्पत्ति की अवधारणा प्रमुख हुई.
- फलतः कबीलाई समाज टूटकर वर्ण विभक्त समाज में बदल गया. चार वर्ण स्थापित हुए.
- प्रारम्भ में वर्ण व्यवस्था कर्म प्रधान थी, जन्म प्रधान नहीं थी. लेकिन बाद में वर्ण व्यवस्था जन्म प्रधान हो गई.

- उत्तर वैदिक काल की सामाजिक स्थिति में ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य को द्विज कहा जाता था.

- इन तीनों को उपनयन (जनेऊ) धारण करने का अधिकार था. सभी वर्ण की महिलाओं एवं शूद्रों को उपनयन से वंचित कर दिया गया तथा उन्हें अधम (निम्न कोटि) का माना गया.

- लेकिन अभी भी इस काल में अस्पृश्यता (छुआ-छुत) की संकल्पना का उद्भव नहीं हुआ था. क्योंकि रत्नाकार जो शुद्र वर्ग में आता था उसकी समाज में काफी प्रतिष्ठा थी तथा उसे उपनयन का अधिकार दिया गया था.